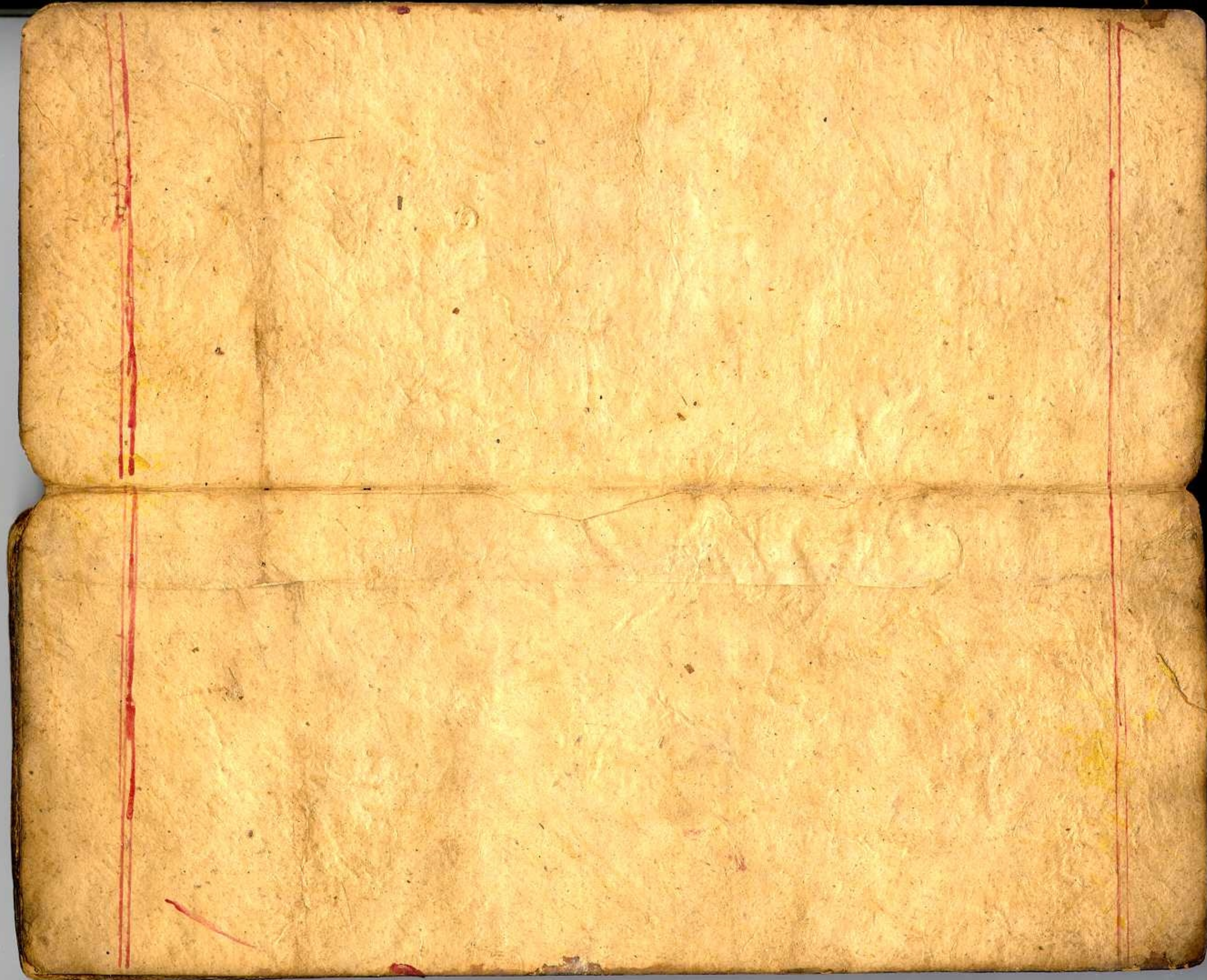
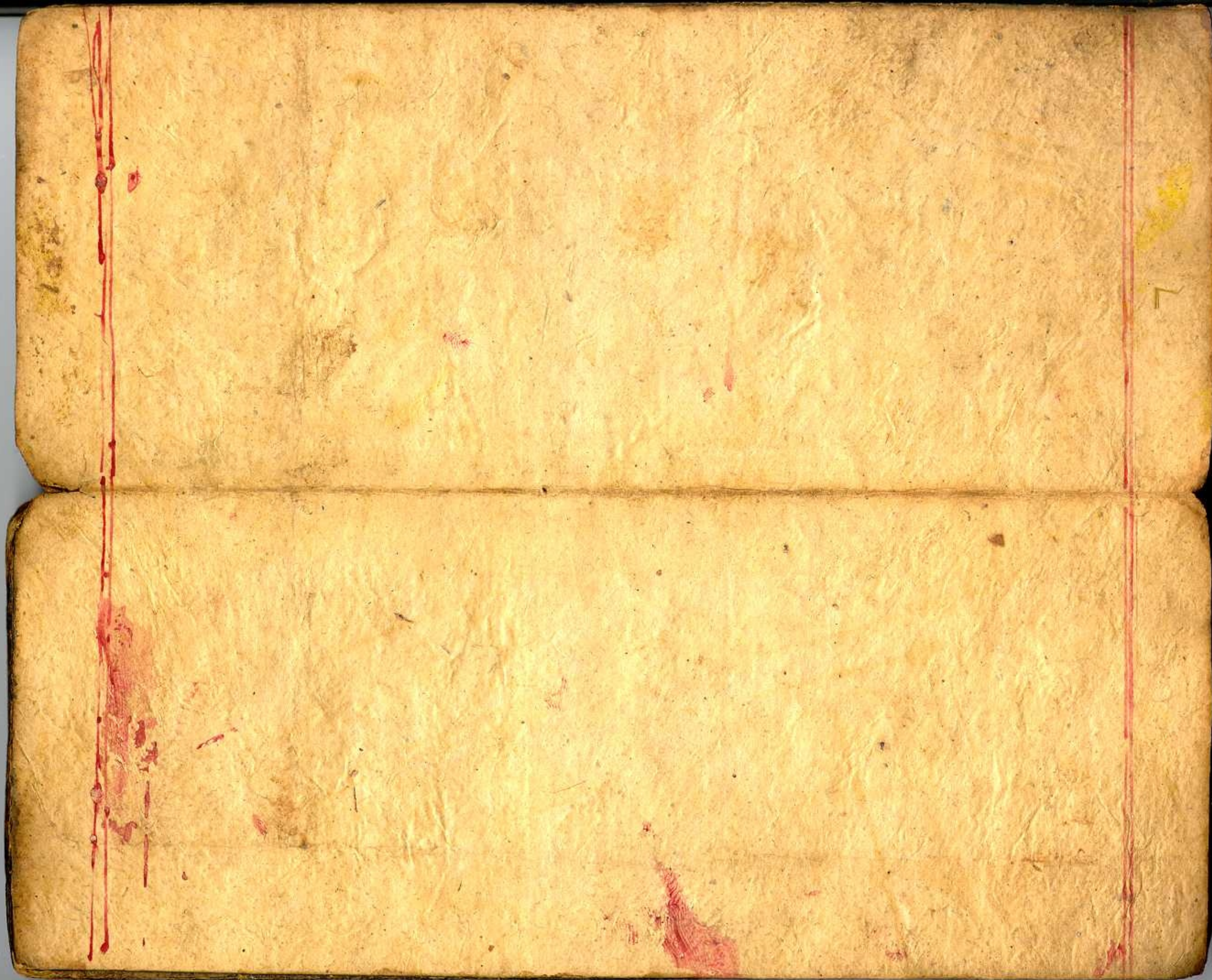












[illegible]

ॐ श्री सौ ॥ इव न्यासयाय ॥ यनिका याव मदाय काव थव थव थायसं
न ॥ यत्र यत्र ॥ यत्र श्रम्य नन सनान ॥ यत्र सिद्धि न उजमका ॥ खान वय
दिय जाय ना ॥ विष्णु ॥ इनायना ॥ थव थव थायसं ॥ थन धनडाव
यायासयिका याव ॥ सयाय गुन नमस्कार न्यास उवयाव अद्ययावय
महायावय ॥ यत्र श्रम्य नन सनान अलिसनाना वहुसम नेक वहुन
कृद गमन स्ययम् कसम किरिनि न ययय ॥ मसयान वययय ॥ यत्र
सिद्धि न उजमका दि सी खान ॥ गमयति न जयवये ॥ विद्दीष्टी वि यनादवी
वीद्दीष्टी काम ध्वनि वीमद सो नना मृगयथा दयान ॥ विद्दीष्टी सर्वम

नासनायमधुलाय नम ॥ विद्दीष्टी जानधनयि भयनम ॥ ३ कामगिपियि
भयनम ॥ ३ यत्न गिपियि भयनम ॥ ३ आद्यानयि भयनम ॥ ३ किनिर्जन
रुद्राय श्रीमहायात्राय नम ॥ विद्दीष्टी दयाय नम ॥ दीसिनय सारा ॥ श्रीसिवा
यवीषद ॥ क्लीकवचाय हं ॥ सो ननु नयाय वषद ॥ वृद्ध सुयकृद ॥ मुक्ति सयुज
यायमनु ॥ यत्र श्रम्य नम ॥ न अष्ट नम ॥ लघुव्याथेनम ॥ व हलि न्ये नम ॥ ३
दापिन्ये नम ॥ व विहृ लि न्ये नम ॥ स सुधिये नम ॥ ह सुव्याथेनम ॥ ल कवि
लाय नम ॥ कृद याकया वारु न्ये नम ॥ विद्दीष्टी श्री अग्निमधु वायदशकला
समन नम ॥ यात्रमन्थ सयुजन ॥ कठं कविनि श्री नम ॥ खंडं नाविन्ये नम ॥ ३

लं धृम्यायेनम॥ धर्ममपि कायेनम॥ ईथं कालिन्त्रेनम॥ वंदंयुयेनम॥ कृंधं
 सुखमायेनम॥ ऊर्नं कागदायेनम॥ पूंयं विस्रयेनम॥ रंरं वाविन्त्रेनम॥ टं
 वं धात्रिन्त्रेनम॥ ०रं क्रमायेनम॥ ३रं द्वादशक वात्मन आदि रम मलु नायन
 म॥ ध्वनयुजा॥ अक्रु मिनादि रुजुवे संदत्ता॥ गायिनिन उवा वन या डाव
 याव यूनय र॥ अष चक वसान दशादि मथयव॥ सुसुसुसुसु त्रिकु नमूडारा
 मथर॥ ध्यान॥ दिगु वद वसं का मां मा त्रि न य नि ना गि नि न व जी व न सं य न्ना मि
 न्द्रा ये च उरु जा॥ या सां कू स ध नू वान द ध नि य नि ना गि नि न क र्प क ऊ म
 इष्टा दि ध नू या ध्व वा नू नि॥ य धू या स धा म धू दं का व न सं क वा द नं स वः
 व उ सकाल ४

न य व मान नं साहा या व क सिद्ध य र॥ य ऊ रं॥ अं अभ ना क ला येनम॥ जी ला
 न द्यो येनम॥ ६०० य षा येनम॥ ६०० तु स्त्री नम॥ ३ य स्त्री नम॥ ३ व के नम॥ ३ ध्वं ये
 नम॥ ३ धा मिन्त्रे नम॥ ६ व लु का येनम॥ ६ का स्त्री नम॥ ३ था म्ना येनम॥
 व विन्त्रे नम॥ ३ ल न म्ना द्यो येनम॥ ३ य न्ना येनम॥ अं य न्ना म्ना येनम॥
 अं काम द्यो येनम॥ ३ मा धा द श क वात्मन साम मलु ला य अद्या म ना य
 नम॥ ३ र्दी धी अभ नं धू न्म न्ना र व न्म न्ना व वि नि न्म न्ना सा व य र
 धू क सा य वि भा य य सां रं स न्म न्ना स य नम॥ ३ र्दी धी स्त्री की कू द्वा
 न न द रं व वा य स र्वा द यं नम॥ य न्ना म्ना द स य र॥
 ३ र्दी धी

यदिय जाय गरु॥ सर्वो न च मयि निरुद्धादि॥ न र्थथ न॥ विहाजन॥ या
नृ शिव शक्तिः थव थव थय न॥ ॥ यस्य राजन॥ सुगोचः अद्यादिमासन
क गत्यादि॥ गुन नमस्कृत॥ अखण्डमन्त्राकारं शोदि॥ त्रिकोणो वनमग्न
नृणां यादकी॥ त्रिकोणो वनमसिद्धिगुन नृणां यादकी॥ ३ यनमोनिगुन नृणां या
दकी॥ ३ यनमाचार्यगुन नृणां यादकी॥ ३ यवसिद्धिगुन नृणां यादकी॥ अदिसि
द्धिगुन नृणां यादकी॥ ३ नित्यगुन नमस्कृत॥ ३ त्रियुनसद्वि अमृतानुवा
यनाय नमः॥ ३ पादाम्बुजास्त्राय नमः॥ ३ आत्मास्त्राय नमः॥ त्रिकयमूलं॥ क्रीक
नमः॥ सोऽक नारा॥ आसनयुजा॥ त्रिआध्वनशक्ति कमलासनाय शार्व

शीक्रिया॥ आसनधत्वा व० न॥ पृथिवीमनूयुक्तमवि० स नमस्तु कुम्भा
दवता आसनविनिर्थागा॥ पृथिवीत्वं धृगालोकीदवित्वं विष्णुना धृगं॥ त्वं
वक्ष्ययमादवि० यविर्गुन नृणां सन॥ शिवशक्तिः कथं॥ ३ कुम्भासेनाय॥ ३
नि आसनयुजा॥ अथरुद्रं शुद्धि॥ यादादि जानूयुर्गुनं पृथिवीस्मर्तुं यतुन
संयोनवर्गुवैष्णवदेवर्गं नमः॥ लवीर्जं ध्यायन्॥ जान्यादिना क्रिययोर्न जाय
स्मर्तुं धनं वा कारं शुक्लवर्णं विष्णुदेवर्गं नमः॥ लवीर्जं ध्यायन्॥ नाया
दिहृदिययोर्न गजस्मर्तुं त्रिकाणकारं न कवर्णं नमः॥ लवीर्जं ध्याय
यन्॥ हृद्यादि कवर्णययोर्न वायुस्मर्तुं वक्त्राणकारं कवर्णं नमः॥ लवीर्जं ध्याय
नृणां देवर्गं॥

[illegible][illegible]

सनाययाइकी॥सिंहासनाययाइकी॥हूमाग्रीशुधीकनगहासनाययाइ
की॥शीकीकनयलुवठुकनाथययाइकी॥क्राकिहूक्राजानवनिमहाउ
क्रानकनयानाययाइकी॥श्रीशीसिद्धियामलुभययाइकी॥जाजिहूयीआगि
निवीयाइकी॥धुननवलिरु॥आवाक॥गडदलुनऊनिविषुथानिमूर्ध
दसेयन॥गव्यसयजन॥आवावसकयथादि॥मसासाययाइकी॥यान॥वास
कसकयालंयप्रिधुनविगुनसदायहूविनद्विगुविनवकवनगजानन॥
प्रियाऊलि॥कनसकमउगुवप्रकालिमूनसनायप्रियाऊविहू
या॥धूयदियजायश्रीग॥गोआयूलंथादि॥यजायाननकमोनवाक

॥नल॥धन॥नमादानयूजा॥वैकीशीगंगायनयनम॥३काकगुयानाय
नम॥३दावासियनम॥३दंदरुलिनम॥३गंगायनयनम॥३ईईमोयनम
॥३वैवदकायनम॥३कीकगुयालायनम॥३नलमलुयायनम॥३कीकाम
मदेवायनम॥३वीवसनायनम॥३दंदरुनिनम॥३सैसवसुथीनम॥३शि
थेनम॥३मायेनम॥३दग्जयेनम॥३रुडकायेनम॥३सुसुनम॥३धुरु
येनम॥३गोयेनम॥३लोकाधिनम॥३वालाधयेनम॥गानयविधाः
सादन॥३नयसवधुयकृताऊकृताविविसक्तिगानकृताविक्रिकलनन
सनुहिवालाया॥दंदरुनीनम॥धुनदानयूजा॥नमादिगपानयूजन॥३ल
वक्रनवालाधियनयनम॥

ॐ ह्रीं शिव वज्र रुद्र साय ४ सु नाथिय नय ॥ व नाव न वा रु ना ४ वज्र रुद्र साय ४ ॥
कियू काय सीजा नाय सय निवा ना य नम ॥ ३ ॥ श्री गुरु नमो नाथिय न
य म वा साय ॥ शक्ति स साय ॥ शक्ति यू काय सीजा नाय सय निवा नाय नम
॥ मय माय ॥ थ नाथिय नय सदि वा साय ॥ द गुरु साय ॥ शक्ति यू काय सीजा ना
य ॥ शय निवा नाय नम ॥ ३ ॥ के ने स साय ना रु साथिय नय म नूष्मा ॥ नाय ख
रुद्र साय ॥ शक्ति यू काय सीजा नाय सय निवा नाय नम ॥ ३ ॥ वृ व नू ॥ नाय ज ना
थिय नय म क ना साय या स रुद्र साय ॥ शक्ति यू काय सीजा नाय सय निवा ना
य नम ॥ ३ ॥ यू वाय थो यानाथिय नय रु लि ना साय मूक स रुद्र साय ॥ शक्ति यूः

काय सीजा नाय सय निवा नाय नम ॥ ३ ॥ सू क व नाय ज रु नाथिय नय मू सव
रु नाय ग दा रुद्र साय ॥ शक्ति यू काय सीजा नाय सय निवा नाय नम ॥ ३ ॥ ह्रीं सा
नाय विद्याथिय नय वृ वा वृ धाय धू न रुद्र साय ॥ शक्ति यू काय सीजा नाय सय
निवा नाय नम ॥ ३ ॥ मू मू न नाय नाग मथिय नय व क रुद्र साय ॥ शक्ति यू काय
सीजा नाय सय निवा नाय नम ॥ ३ ॥ उ वृ द्ध न विद्याथिय नय हं सा नू राय ॥
रुद्र साय ॥ शक्ति यू काय सीजा नाय सय निवा नाय नम ॥ ३ ॥ निदि ग या न यं जा ॥
॥ ॥ कल स वृ ज न ॥ न्या स ॥ ३ ॥ ह्रीं स ॥ मू धा व श क थ या द की ॥ श्री वा दा लू वा
साय या द की ॥ क ना साय या द की ॥ क र्ण का साय या द की ॥ य शा साय नम ॥ ॥
का म जि आ दि यो थि ३

नमः॥विष्णुं मूदिङ्गागस्थानम॥मखादिद्वादशावाधस्थानम॥मूद्वर्कस्थान
मा॥गंगामिधोयसागरस्थानम॥मूद्विर्वज्रविस्थानम॥वह्निवादिस्कः
विस्थानम॥मूनमूदिमूककूननागवाङ्स्थानम॥सान्निभम॥विद्यायनम
॥कवायनम॥निवृत्तिनम॥प्रतिष्ठायनम॥प्रियाङ्गुलि॥उं ईं सङ्गा कूनवृष
महासनसंभाहनः सकल निर्थः मनुदवना कलनत्वा धिययवु मू विष्
वृडात्मनः मू विद्याधिवरत्वाय मू श्री श्री सर्वपूर्वकवठामूर्ते यय यादका
॥हृदयादिषु जिनसंयुज ॥ मू वावु मू ॥ धनमूद्वादार्णयनू ॥ वलि ॥ वू
यदि य जायस्युः ॥ नत्वा यदि सक व निर्थजनयूर्ना सादि ॥ उधवा

युग॥ सैः स्रनिथि॥ ४॥ मूषि र्खी नम॥ वामनासी युग॥ ६॥ स्रल्लि॥ दिद्ये डिद्रा र्खी नम॥
॥ दकल गल्लु॥ ७॥ रुवस कुल्लुद वि र्खी नम॥ वामगल्लु॥ ८॥ रुचि सड्डुक डि र्खी नम॥
॥ ९॥ रुकाकि कस विरुत मूकि र्खी नम॥ १०॥ उड्डु उरु॥ ११॥ असंथा अरुय दालाम्
रि र्खी नम॥ १२॥ रुधदन॥ १३॥ रुनूयदुधन उरुम र्खी नम॥ १४॥ उड्डुदत॥ १५॥ रुमूकुव
सशी मूखि र्खी नम॥ १६॥ उड्डु डि व डि॥ १७॥ रुमदासन ४ विद्याम र्खी नम॥ मुखसर्वेन॥ क
कावस मदाकालि र्खी नम॥ दक्रिनवाद्रु॥ खेवदु सडाव सनि र्खी नम॥ दक्रिनदल्लु
॥ १८॥ र्ग यंयानलगस सर्वसिद्धि र्खी नम॥ दक्रिनमलि वरु॥ र्ग डि वात्मने लाक विक्काया
नम॥ दक्रमंगलिमूल॥ १९॥ उरु कनूद समंयुडाकि र्खी नम॥ दक्रलमं लागु॥ २०॥ र्ग कमी

वादी गूला ॥ वैलदिगस कावला लिखी नम ॥ दक्र नवा स्यय ॥ रूडिखली सकः
दिनिखी नम ॥ वामया स्यय ॥ वैकु ललु सकय दौ विनिखी नम ॥ विरुवस्य ॥ रूडिखली
सवक कालिखी नम ॥ नाकी ॥ ममहा कालि ॥ जया खी नम ॥ ३०३ ॥ यं वा वि ॥ सम
खिखी नम ॥ हृदय ॥ वैरुडं गस व निखी नम ॥ दक्रिनवा हूमय ॥ लयिना की समा
धवी खी नम ॥ वामवा हूमय ॥ वैखडि ॥ वानु निखी नम ॥ अयव गल ॥ रूडिखली
य निखी नम ॥ दक्रिन कवि ॥ वैसखि ॥ लक्रा व व निखी नम ॥ वामकृकि ॥ सैरु
मिस माहामाया खी नम ॥ हृदादियानिया दइ गय ॥ हं लकलि स दम निखी न
म ॥ ३०३ ॥ लय रुवान न स भाह निखी नम ॥ मुख ॥ रूडिखली नम ॥ मुख

सर्वी ॥ रूडिखली कलादि न्या स ॥ माह कास न्या स ॥ न्या स निवकथ द विधा व
न्या स यं वं स रं ॥ गला सयुध मा न्या स ॥ द्विनिय सुशुद्धा र्म रं ॥ नक्रुध नृनिय ॥ स्य
या गिरिध्वरुथ कं ॥ नासि रि ॥ ययुध मा न्या स ॥ ययुधिय ॥ निगध रं ॥ धा व न्या स
स्ययथा क ॥ सर्व न वाय नाडि रं ॥ न्या न्या सु नो सु संयुध ॥ सर्वथा गिरि ॥ ना स
यका न्या क वरु ॥ विनिमान मखंड न ॥ सयव ययुध ॥ सर्वथा सस्यय यन म ध्वन
॥ धा व न्या स विदि नयं ॥ वमद वयया र्ध नि ॥ सा विना मयु मायु नि ॥ नवकथ यय
इरु ॥ रूडिखली स न्या स ॥ रूडिखली साय नम ॥ रूडिखली नम ॥ रूडिखली नम ॥ रूडिखली नम
काय नम ॥ रूडिखली नम ॥ रूडिखली नम ॥ रूडिखली नम ॥ रूडिखली नम ॥ रूडिखली नम

[illegible]

नायनम॥ उदय॥ उडि सिंहायनम॥ दक्रलकुड॥ अमृष्टाय मलककल्लनम
॥ दक्रलसिलयार्थय॥ कखगयडुलथनम॥ वामगिनयार्थय॥ वड्डकजककुव
डिकायनम॥ वामकूड॥ ठठठरलधनवेनम॥ क॥ गथदधनमकलानम॥ अ
की॥ यरुवरुमकुकायनम॥ मूलाधन॥ यनलवमिनायनम॥ वामपाद॥ अ
नाडिनाम॥ अ॥ कामरुयिभयनम॥ आवागलडिभयनम॥ अ॥ नयालवि
भयनम॥ अ॥ यलुवड्डनयिभयनम॥ उयत्रमिभयिभयनम॥ उकन्यकम्युयिभ
यनम॥ मयूगुगिभयिभयनम॥ अ॥ मूदयिभयनम॥ अ॥ आम्बानकध्वनयिः
थयनम॥ उवकाशयिभयनम॥ अ॥ प्रिप्रायिभयनम॥ अ॥ कामकायिभयनम॥ अ॥

कैलाशयिभयनम॥ उ॥ रुगुयत्रयिभयनम॥ अ॥ कदालयिभयनम॥ अ॥ वड्डय
त्रयिभयनम॥ क॥ धीयिभयनम॥ खवकालयिभयनम॥ गजालीधुत्रयिभय
नम॥ द्यमालवयिभयनम॥ उ॥ कुत्रयिभयनम॥ व॥ दविकाटयिभयनम॥ उ॥ अ
कर्त्रयिभयनम॥ अ॥ मरुध्वनयिभयनम॥ अ॥ अ॥ रुद्रासयिभयनम॥ अ॥ विनाजयि
भयनम॥ अ॥ राजगुहयिभयनम॥ अ॥ म॥ दाम० यिभयनम॥ उ॥ क॥ लूगिभयिभयन
म॥ अ॥ रुद्रलायत्रयिभयनम॥ अ॥ अ॥ कात्रयिभयनम॥ अ॥ उ॥ यनिकयिभयनम॥ अ॥ थ
उ॥ यनियिभयनम॥ अ॥ द॥ व॥ वि॥ ज॥ य॥ य॥ यिभयनम॥ अ॥ व॥ क॥ ल॥ य॥ य॥ यिभयनम॥ अ॥ न॥ ह॥
सि॥ ना॥ य॥ य॥ यिभयनम॥ अ॥ य॥ दा॥ स॥ यिभयनम॥ अ॥ रु॥ पु॥ था॥ ग॥ यिभयनम॥ अ॥ व॥ ष॥ ष॥ य॥ यि

अयनम॥ रुमायाय नमि॥ अयनम॥ मजाय नमि॥ अयनम॥ यमत्रयवि
 यि॥ अयनम॥ वंशीयि॥ अयनम॥ लमत्रयि॥ अयनम॥ वंशिनिवत्रयि॥ अय
 नम॥ शमाद्वयि॥ अयनम॥ विवामयत्रयि॥ अयनम॥ सहिल॥ अयलवि॥ अयन
 म॥ हसमादालक्रीयत्रयि॥ अयनम॥ लडादियानवि॥ अयनम॥ कृकयाकृकयिः
 अयनम॥ कृनियि॥ न्याम॥ ॥ श्रीकामिनित्रियत्रायनम॥ श्रीमादनित्रिय
 त्रायनम॥ श्रीमदनात्रियत्रायनम॥ श्रीउत्मादिनित्रियत्रायनम॥ उडाव॥ अत्रियः
 त्रायनम॥ उश्वत्रियत्रायनम॥ अश्विकात्रियत्रायनम॥ अश्विकावलित्रि
 यत्रायनम॥ ॥ कृदनित्रियत्रायनम॥ ॥ शिवद्विनित्रियत्रायनम॥ ॥ शुक्रगात्रियत्राय
 नम॥

अविश्ववित्रियत्रायनम॥ श्रीमहालक्रीत्रियत्रायनम॥ श्रीकालनित्रिय
 त्रायनम॥ श्रीवामक॥ अत्रियत्रायनम॥ कृकबमालनित्रियत्रायनम॥ ख
 थायिनित्रियत्रायनम॥ गरुगभवहात्रियत्रायनम॥ दवात्रयवित्रियत्राय
 नम॥ उवामिकात्रियत्रायनम॥ अयि॥ लात्रियत्रायनम॥ कुरुगसयैत्रिय
 त्रायनम॥ उशुन्दत्रियत्रायनम॥ अनिलयनकात्रियत्रायनम॥ ॥ सिद्ध
 स्वत्रियत्रायनम॥ ॥ अनिमासिनित्रियत्रायनम॥ ॥ श्रीमाद्यात्रियत्रायनम॥
 उवर्त्तमा॥ लात्रियत्रायनम॥ ॥ रमंगलात्रियत्रायनम॥ ॥ गरुगमालिनित्रिय
 त्रायनम॥ ॥ नवीडात्रियत्रायनम॥ ॥ थथा॥ ग॥ अत्रियत्रायनम॥ ॥ दश्रिका

श्रीकामाक्षिनित्रियत्रायनम॥

त्रियूनाय नमः॥ धं मू ह सा ह त्रियूनाय नमः॥ नं थाम वा यि नि त्रियूनाय नमः॥ व
 वं क स वि त्रियूनाय नमः॥ रुं क र नि त्रियूनाय नमः॥ वं म म वि त्रियूनाय नमः॥
 रं म ना मा त्रियूनाय नमः॥ मं ला कं ध नी त्रियूनाय नमः॥ यं व क्का त्रियूनाय नमः॥ न
 षुं क्का त्रियूनाय नमः॥ लं षुं क्का त्रियूनाय नमः॥ वं म य वा त्रियूनाय नमः॥ षं स म य
 त्रियूनाय नमः॥ षं वि म वा त्रियूनाय नमः॥ सं म भा ना त्रियूनाय नमः॥ हं रं व वि त्रियू
 नाय नमः॥ लं मू धा वा त्रियूनाय नमः॥ कं स र्वा क र्मा त्रियूनाय नमः॥ ॐ नि र्यं वा स
 त्रियूनाय नमः॥ ॥ ॐ काम व नि र्थी नमः॥ ॐ कामी नि वि नि र्थी नमः॥ ॐ का र्क
 का नि र्थी नमः॥ ॐ का नि म न्था ह ल नि र्थी नमः॥ उं काम द्यु क म वि ल या र्थी नमः॥

ॐ कामवालि विवायि निखी नमः ॥ ॐ कामकल्यल निखी नमः ॥ ॐ कामकस्यामर
 निखी नमः ॥ ॐ कामवर्द्धन कलुविस्मि नखी नमः ॥ ॐ कामविद्य नखी नमः ॥ ॐ वमवि
 साव निखी नमः ॥ ॐ वमनत्रलिहि नखी नमः ॥ ॐ वनिनाथदि नखी नमः ॥ ॐ व
 निधियनमा नखी नमः ॥ ॐ वलातिनाथकुजा नखी नमः ॥ ॐ ४ वमा कान्कयना नखी नमः ॥ ॐ
 व वमान निखी नमः ॥ ॐ वनि सायल के नखी नमः ॥ ॐ गगनभाद्र निखी नमः ॥
 ॐ नन्दकमदा नखी नमः ॥ ॐ नन्दिनाथकुव नखी नमः ॥ ॐ नदीदयिनि सुविदल्यः
 नखी नमः ॥ ॐ नि सायवमदि निखी नमः ॥ ॐ नृसिंहकवयिना नखी नमः ॥ ॐ वस्य
 धवक निखी नमः ॥ ॐ नदाथनूमूषि नखी नमः ॥ ॐ कामनिधि नखी नमः ॥

वियुक्तं दत्तकान् वक्तव्यवियुक्तं ॥ वामकान् वक्तव्यवियुक्तं ॥ मन्त्रं वियुक्तं
लमन्त्रवियुक्तं यत् ॥ वक्तव्यं नमस्तु ॥ आवाहं यानि नीषण्णमुद्रादस्येत् ॥
स्वसिद्धिं कथेयवियुक्तं यत् ॥ मूलमन्त्रं नित्यां जलि ॥ विवारं उवाच ॥ अक्षि क
पुं कामवृत्तं धर्मादि यादिकं कृत्वा ॥ मुद्रायुदं दत्तं यत् ॥ ॐ नित्यं ननु जा गम्यतां ॥
नमो युक्तं ॥ त्रिकीर्णं मणुष्याय नमः ॥ ३ कालाग्निमुद्राय नमः ॥ ३ आध्यात्मिक
य नमः ॥ ३ मूलवक्त्रं नय नमः ॥ ३ अर्चनं नय नमः ॥ ३ शुकनाय नमः ॥ ३ वृथिवीः
नमः ॥ ३ ॐ वृषमुद्राय नमः ॥ ३ विष्णुमहियाय नमः ॥ ३ सुवर्णगिरिव नमः ॥ ३
कल्याणाय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ कल्याणकथा

नमः ॥ ३ ॐ नमो भूय नमः ॥ ३ वदिकाय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ नमो भूय
क्रमध्वं आसनं ॥ ३ धर्माय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ वैवाल्याय नमः ॥ ३ नमो भूय
नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः
मः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ कल्याणाय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय
सनायाय नमः ॥ ३ कल्याणाय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः
यदुपदलयद्रासाय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः
३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः ॥ ३ नमो भूय नमः
वृथिवीयविक्रयवृद्धयनायाय नमः ॥ ३ वाजवायिकयविक्रयनायाय नमः

मा॥ ३ वां कुंज अधिक य नृदय नास्त्रा नमा॥ ३ या वात्वाधिक य ॐ ५ व लय नास्त्राय
नम॥ ३ श्री यंत्र व काय विवदाधिक य ५ दा शिथ नास्त्राय नम॥ ३ श्री सो ४ रिय
वसं नृनि अमृ नाना वास्त्राय नम॥ ३ श्री सो ४ रिय वसं नृनि या नास्त्राय नम
मा॥ ३ श्री सो ४ रिय वासिनि दद्यात्मास्त्राय नम॥ ३ श्री सो ४ रिय नाथीय कास्त्राय
नम॥ ३ श्री सो ४ रिय वमापि नि सवमं नृमाय नम॥ ३ श्री सो ४ रिय नासिद्ध ४
पि सांथ ॥ सिद्धा माय नम॥ ३ ३ व नाथ अय नाथ व नाथ व य नाथ श्री आन
नृ ५ दा शिव ये के य नास्त्राय नम॥ ३ ३ न॥ वा ना के मधु लो रासा ॥ नि नृ च य ६
रुजं । या सा कृ ५ स व वाय ॥ शि वा ग्य स य ६ सदा ॥ व क म व वि वि नृ ॥ गि या
जं लि ॥ हृ द या दि स य ६ ॥ आ वा द्य व ६ ना के नृ ॥ य स्यं नम॥ मृ डा न के य

कृ ५ ॥ ३ मृ हा प्रिय व स नृ नि अर्थ नम॥ ३ मृ हा प्रिय व स नृ नि या य नम॥ या द
था ॥ मृ हा प्रिय ल स नृ नि आ व मे नि य नम॥ मृ ख ॥ ३ मृ हा प्रिय व स नृ नि य र्थ
वा व ॥ मृ कृ ५ य नि ॥ न ना व क य ६ य नृ ॥ ३ गं कु ल गं ण य नि ना थ व ल रा म्भी स
दि नृ ५ या द की ॥ ने स थ ॥ वा कृ ल व द के व रा म्भा या द की ॥ अग्नि का ना ॥ ३ या था
गि नि व ल रा म्भी या द का ॥ वा य थ ॥ कृ कृ थाल स व ल रा म्भी या द की ॥ नि स
न ॥ ॥ गु नृ य कि य ६ य नृ ॥ वृ द्वा णी य न म शि व ना थ णी या द की ॥ दी णी का म ५
श्री म्भी णी या द की ॥ २ वि द्या णान न्द ना थ णी या द की ॥ २ स वान न्द ना थ णी ३ ॥ श्य र्ण
न न्द ना थ णी ३ ॥ २ दि द्या न न्द ना थ णी ३ ॥ २ वि द्या न न्द ना थ णी ३ ॥ २ ण कि ध्व ना
न न्द ना थ णी ३ ॥ क म लान न्द ना थ णी ३ ॥ २ म ना र द्या न न्द ना थ णी ३ ॥ २ य व

शुवि नैजक कुन रेवव रुया रुगमधी ३॥ ने मरु ॥ ३० ॥ अमनय विमि वि ०
जयनि कुरु ० रयायी वानाहि ० कउ लमन रेवव रुया रुगमधी ३॥ वरु न ॥ ३॥
यजकु ला नकयि ० वनि कुरु वुदुयि ० द्रुलि कि लकि लाम्याद विने कुरु
वालिस रेवव रुया रुगमधी ३॥ वायु वा ॥ ३॥ य ० अली न्य व वि ० ३॥ कामका न
कुरु ० उदायि वाम ० उ कुरु ये न रेवव रुया रुगमधी ३॥ कुरु वल ॥ ३॥ अदवि
काद यि ० आकायि मरु लत्री मरु सैराव रेवव रुया रुगमधी ३॥ ० ० ॥ न ॥ ॥
० ० द्रुदि यु जनी ॥ ॥ अथ धीय कुरु यजा विधि ॥ ३॥ धीय सर्व संश्रुति मूडाद विधी
वाइकी ॥ ३॥ सर्व विद्या वणी मूडाद विधी ३॥ ३॥ सर्व वध्य कवि मूडाद विधी ३॥ ३॥
यी साना नै वामा वरु न सै

सर्वोत्पादन कवि मूडाद विधी ३॥ ३॥ सर्व मही कुरु मूडाद विधी ३॥ ३॥ सर्व खर
वि मूडाद विधी ३॥ ३॥ सर्व विजु मूडाद विधी ३॥ ३॥ सर्व निख ० मूडाद विधी ३॥ ३॥
सर्व यानि मूडाद विधी ३॥ यष्टि मादि मय्य नै वामा वरु न सै मयु जयन ॥ अस्मिन्
वकु नायिका थान ॥ यरु कुरु कुरु वामा मूडाद कुरु वरु वरु थानि नि ॥ शुक्रा विनयन
माया वाना धीय यवा ययन ॥ अस्मिन् विद्यु वाद विधी वाइकी ॥ मय्य सै यय ॥ ३॥
योडा सर्व संश्रुति मूडाद विधी यामि नम ॥ यगा यकट यागि न्य यथ मय्य लाक मारु
नय कुरु यजा विधि ॥ ३॥ न्य यथ वकु य विधि ॥ ॥ अथ धाद धाद लसै यय ॥ धाद
धाद लव प्राय नम ॥ ३॥ धीय अकामा कुरु विधि निष्ठा कुरु वाद विधी वाइकी ॥ ३॥ अथः





३॥ आत्मनः ॥ ३ यत्नं लवम् मंगलं गिनिदविष्टी ३ ॥ ३ यत्नं ॥ ३ लवम् मंगलं
 निदविष्टी ३ ॥ ३ यत्नं ॥ ३ यत्नं लवम् मंगलं गिनिदविष्टी ३ ॥ ३ यत्नं ॥ ३ लवम् मंगलं
 म. द. क. ॥ निव. न. य. दी. न. व. क. व. ल. ॥ क. उ. नि. त्वा. य. क. प्रि. प. न. म. द. वि. ॥ नि. क्री. क्री. ॥ वि. य.
 न. स. द. नि. द. वि. ॥ ३ ॥ म. य. स. य. ॥ ३ ॥ सर्व. क. र्थ. नी. म. द. द. र्थ. यो. मि. न. म. ॥ ३ ॥ ना. य. क. न.
 न. य. गि. न. य. नि. य. स. र्थ. स. र्थ. स. र्थ. क. र्थ. क. ल. व. क. य. क. वि. वि. ॥ अ. थ. व. ल. द. ॥ न. व. क. य.
 क. म. ॥ ३ ॥ ३ ॥ व. ल. द. ॥ न. व. क. य. न. म. ॥ नि. क्री. ॥ सर्व. स. र्थ. नि. द. वि. ॥ या. इ. की. ॥ ३ ॥ सर्व. वि.
 दा. व. नी. द. वि. ॥ ३ ॥ ३ ॥ सर्व. क. र्थ. नि. द. वि. ॥ ३ ॥ ३ ॥ सर्व. द. नि. द. वि. ॥ ३ ॥ ३ ॥ सर्व. स. र्थ. मा. द. नि.
 द. वि. ॥ ३ ॥ ३ ॥ सर्व. स. र्थ. नि. द. वि. ॥ ३ ॥ ३ ॥ सर्व. उ. म. नी. द. वि. ॥ ३ ॥ ३ ॥ सर्व. व. र्थ. क. वि. द.
 मा. द. नी. क. य.

६ यत्नं लवम् मंगलं गिनिदविष्टी ३

३ ॥ ३ ॥ सर्व. व. र्थ. नी. द. वि. ॥ ३ ॥ ३ ॥ सर्व. मा. द. नि. द. वि. ॥ ३ ॥ ३ ॥ सर्व. र्थ. सा. व. नि. द. वि.
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ सर्व. स. र्थ. नि. य. नि. द. वि. ॥ ३ ॥ ३ ॥ सर्व. म. न. म. यि. द. वि. ॥ ३ ॥ ३ ॥ सर्व. द. द. क. र्थ. क.
 नि. द. वि. ॥ ३ ॥ ३ ॥ य. वि. मा. दि. क. न. न. य. नी. व. मा. व. र्थ. ल. र्थ. य. ॥ अ. सि. न. व. क. व. क. र्थ.
 यि. का. ॥ न. म. न. ॥ ३ ॥ ३ ॥ व. व. न. द. य. द. र्थ. न. थ. य. ॥ क. य. द. य. न. द. व. न. र्थ. वि. ग. र्थ. सा.
 ॥ य. वि. य. न. व. गि. नि. ॥ ३ ॥ ३ ॥ क्री. क्री. ॥ वि. य. ल. वा. गि. नि. द. वि. ॥ या. इ. की. ॥ म. य. स. य. ॥
 क्री. क्री. सर्व. व. र्थ. क. वि. म. द. द. र्थ. यो. मि. न. म. ॥ ३ ॥ ना. स. म. य. द. य. गि. न. य. र्थ. सर्व. स. र्थ. सा.
 म. य. द. य. क. य. क. य. क. वि. वि. ॥ अ. थ. वा. क. द. ॥ न. व. क. य. क. य. क. य. ॥ ॥ द. ॥ न. ल.
 व. क. य. न. म. ॥ नि. क्री. ॥ सर्व. सि. दि. य. द. वि. ॥ या. इ. की. ॥ ३ ॥ सर्व. स. र्थ. य. द. वि. ॥ ३ ॥ ३ ॥

सर्वविद्यकनिर्दविष्टी ३॥ ३ सर्वमंगलकानिर्दविष्टी ३॥ ३ सर्वकामयुदादविष्टी
३॥ ३ सर्वदुःखविमोचनिर्दविष्टी ३॥ ३ सर्वमृत्युविनाशिनिर्दविष्टी ३॥ ३ सर्ववि
श्वविनासनादविष्टी ३॥ ३ सर्वोक्तसुन्दरनिर्दविष्टी ३॥ ३ सर्वसौभाग्यदायनिर्द
विष्टी ३॥ यष्टिमादिकानि नैऋत्यार्कं वामावरुणयुजयुक्तं ॥ अस्मिन् वक्त्रे च का
न्यैकिका यानमनु ॥ य प्रह्वयववारिणि शारुमाननुजावृजानुक्ते यद्वासना
युक्ताः प्रयष्टीति प्रागुक्तं ॥ कौकुक्कु ४ त्रियुवाष्टीदविष्टी यादकी ॥ मल्लसंयुक्त
॥ स सर्वोत्पादनकालिमृदादक्षायामि नमः ॥ ५ ना ४ कलकी लथागि न्ययम
सद्योर्थमात्रे कवकयुजाविधि ॥ अथ नूतनप्रदक्षानविक्रमं वक्तुं य

३॥ अन्तर्दक्षप्रवक्तुयनमः ॥ वृद्धीष्टी सर्वरूपानदविष्टी यादकी ॥ ३ सर्वशक्ति
मयदविष्टी ३॥ ३ सर्वधर्मयुदादविष्टी ३॥ ३ सर्वरूपानमयीदविष्टी ३॥ ३ सर्व
व्याप्तिविनाशिनिर्दविष्टी ३॥ ३ सर्वोक्तसुन्दरनिर्दविष्टी ३॥ ३ सर्वपायदः
नादविष्टी ३॥ ३ सर्वानन्दमयिदविष्टी ३॥ ३ सर्वेनकास्वयिणीदविष्टी ३॥ ३
सर्वमिन्दुवयुदादविष्टी ३॥ यष्टिमादिकानि नैऋत्यार्कं वामावरुणयुजयुक्तं
३॥ अस्मिन् वक्त्रे च का न्यैकिका यानमनु ॥ इति यासंक्षिप्तं काउं मनु लिंग
वदिरुर्गं निलवर्णं त्रि नगुं यष्टी त्रियुवमानिव ॥ ऊर्ध्वं ४ त्रियुवमानि
लिनिर्दविष्टी यादकी ॥ कौसर्वमाहाकुक्षमृदादक्षायामि नमः ॥ ५ नानिगर्थथा

[illegible]

यन्नासिद्धायासाकयवला रुया ॥ श्री श्री श्री नियन्नासिद्धाष्टीयाइकी ॥ मन्त्रसंयुक्त
॥ श्री सर्वेश्वरलिमुद्रादष्टायामीनमः ॥ १ ॥ नानिबदस्य यागिन सकम् सर्वथागद
न ॥ वक्रवृजाविधि ॥ अथवानायाय्याययवक्र अष्टकानरिन नृत्तिका नान्ना
नय प्रजयन् ॥ ॥ यथायवक्रायनमः ॥ त्रिदोषीत्रया नालावासाडाडी कीवृ स४कः
म ॥ अ४कामस्वनवानशानमः ॥ त्रिदोषी कीवृ स४नया नालावासाडाजम्कनरा४क
मध्विवाक्षानमः ॥ यश्चिम् ॥ त्रिदोषी नालावासाडाडीधमादनाय कामध्वनचायाय
नमः ॥ त्रिदोषी कीवृ स४नया नालावासाधमादनाय कामध्विवायायननमः ॥ उरुव
॥ त्रिदोषीत्रया नालावासाडाडी कीवृ आदधिकननाय कामध्वनचायायनमः ॥ ३

बुद्धादी की वृत्त ४ नया नाला वा सादी वलिक वल य कामध्वनियामथनम ॥ पूर्व ॥ ३
बुद्धादी की वृत्त ४ नया नाला वा सादी की वृत्त ४ का सुकनाय कामध्वनियामथन
म ॥ दक्षिण ॥ अस्मिन् वक्तु वक्तु नायिका ध्यानमनु ॥ म धुमाला गला वक्तु य सुका
क व ना रया ॥ ३ क व ना स ना य का वन्द धी विय ना मि का ॥ श्री श्री श्री ४ विय ना मि
का शी वा इ का ॥ म अ सं य ॥ श्री सर्व वीज मूला द श्या मि न ॥ म ॥ न गानि न ह
स्य या गि न्य मूळ म वक्तु सर्व ५ सिद्धि मय वक्तु पूजा विधि ॥ अथ त्रिकान वक्तु
युजयन् ॥ ॥ त्रिकान वक्तु यनम ॥ बुद्धी श्री श्री अस्मिन् वक्तु काम गि गाल यमि
त्रि सनाथामिक कामध्वनि दवि बुद्धात्त ५ शक्ति धी वा इ का ॥ बुद्धी श्री श्री

सर्व वक्तु जाले वन वि ० डादि सनाथामिक धी वक्तु ध्वनि द वी विष्णु म ५ शक्ति
धी वा इ का ॥ बुद्धी श्री श्री याम वक्तु पूर्व गी त्रि ग द व धी व विय सनाथामिक राग
मालिनि द वि वक्तु म ५ शक्ति धी वा इ का ॥ अस्मिन् वक्तु वक्तु नायिका ध्यानम
नु ॥ वक्तु वक्तु य सं का शी य वक्तु वक्तु वक्तु न गान ॥ वा शी क व ना रिया मूळ मा
ला गल यज ॥ विशा म नु य द द वि मूला विय न मरु ध्वनि ॥ श्री श्री श्री ४ विय न म
रु ध्वना य धी वा इ का ॥ म अ सं य ॥ श्री सर्व त्रि वक्तु मूला द श्या मि न म ॥ न ग
य ना य ना रिया मि न्ना न वक्तु सर्व न धुमय वक्तु पूजा विधि ॥ अथ त्रिकान विन्दु
म अ युजयन् ॥ ॥ विन्दु वक्तु यनम ॥ म अ विय न सं द वि य का ॥ अस्मिन् वक्तु धी

मानयः श्रीकृष्णः श्रीनिवृत्तः रंगमालिनि समयादवीष्टीयाइकां नय
यामिनमः॥ रंगमालनि नयः लामनः॥ श्रीकृष्णः रंगवर्गिनि त्याकामध्वविस्ती
सुः सर्वकलवसंकलिः सः प्रियलशेवविः प्रविशुः श्रीमाहः प्रियवसूचविदवीः
ष्टीयाइकां नयः यामिनमः॥ प्रियवसूचवि नयः नमः॥ नगानि लहस्य यागि
न्यः दहामः वक्रः सर्वानन्दमयः वक्रयुजाविधिः॥ आवाकमून्दा नवकं युदह
यः॥ श्रीनिष्टी प्रियवसूचवी कर्माव्वनष्टी वक्रयुजाविधिः॥ नकउग्र
युजाविधिः॥ गुननमस्कारं न्यासः॥ मरुद्वयः अक्रयरुदः॥ उदीराजय्यार्थक
नियः कयनमः॥ श्रीः नः उग्रयः॥ श्रीनामिकायम्वारुः॥ वनमर्दनीमथुमाय

न विधि नामाधियावृद्धा ॥ स वाधा उ सहस्रार्थे यद्वा गतमनुस्मिना । न द वलु
यव लुभ्य चञ्चाग्रचलु नायक ॥ वलुभ्यलुवनिःश्वैव चलु न या अनियलुका । नी
युना अरूपा कृष्णा निनालुकान्ध धूमिका ॥ विनामुयालुवारूया आचिधस्त
हस्तथा । स्वयविवा र समायूक्त माया रीमिरुमलुव ॥ न व शालामाहादवी मर्ह
रुगवनिनमी मुक्ता ॥ निश्चिन ॥ अ अ रुद्रव लुभ्यद विवक्षाय निवाइकी ॥ ॐ ॐ
यव लुभ्यदवी मर्ह स्वयी ३ ॥ उडुव लुभ्यदवी कामावि ३ ॥ म म वलु नायकिदवी
वैष्णवि ३ ॥ लुव लुभ्यदवी वावाहि ३ ॥ नेनेवलुवनिदवी चन्द्रायनी ३ ॥ उउिवः
लुम्बादवी यामूलुयाइकी ॥ श्री ४ अनियलुभ्यदवी माहा ल श्री वाइकी ॥ थ

मनुनं वलि॥ अथा न वज॥ विधा ऊ वि॥ खठं लान सम्यक्॥ धमनुनं वलि॥
आवाहनं नादि॥ विन्दु थो निमूडा डय थर॥ विन्दु रुथ॥ थ य उग्र व॥ योजा॥ ॥
नना का वि यज यद्॥ गुरु नमस्कारं न्यास॥ स्वाहा अमुनाय ५ रुद्र॥ उरु रुक निरु क
यनम॥ सिद्धी क नालि अनामिकाय स्वाहा॥ दीक्षी म धामाय वा षट्॥ सु रु न रु न्याय
हं॥ नमस्त्रु म्नाय व षट्॥ स्वाहा अमुनाय ५ रुद्र॥ उरु ४ सिद्धि क नालि दक्कि नव क
यनम॥ दीक्षी वामव कायनम॥ सु रु ४ मन्त्र व कायनम॥ ॐ नित व क न्यास॥ उरु
५ रुद्र दयायनम॥ सिद्धी क नालि सिन स स्वाहा॥ दी ४ वी सिखा य वी षट्॥ सु रु ४ क
वाय हं॥ नम ४ ननु न्याय व षट्॥ स्वाहा अमुनाय ५ रुद्र॥ ऊ न या क योजा॥ अथ

या न योजा॥ रु रु रुद्रि॥ आत्म ऊ॥ विन्दु रुथ॥ रु स या ड की॥ आवाहन॥ श्री संवर्ग
नादि॥ आसन ना॥ आ धाल कि कम लो म्नायनम॥ उरु ४ क रु रु ग मूडा म्नायनः
मा॥ उरु ४ रु रु ग मूडा म्नायनम॥ उरु ४ रु रु रु रु ग मूडा म्नायनम॥ उरु ४ रु
वि रु ग मूडा म्नायनम॥ उरु ४ रु रु रु रु द मूडा म्नायनम॥ उरु ४ रु रु रु रु द मूडा म्नाय
उरु ४ साम व द मूडा म्नायनम॥ उरु ४ अथ व द मूडा म्नायनम॥ उरु ४ नाद व द
मूडा म्नायनम॥ उरु ४ रु रु रु रु य ग म्नायनम॥ उरु ४ रु रु रु रु य ग म्नायनम॥ उरु ४ रु रु रु रु य
ग म्नायनम॥ उरु ४ रु रु रु रु य ग म्नायनम॥ उरु ४ रु रु रु रु य ग म्नायनम॥ उरु ४ रु रु रु रु य
वायन य ग म्नायनम॥ उरु ४ रु रु रु रु य ग म्नायनम॥ उरु ४ रु रु रु रु य ग म्नायन

[illegible][illegible]

खड्गगनसंन्युत ॥ धर्मननं वलि आवाहनादियन्तना कन्या ध्यानम ॥ विन्दु
या निमूढादयथ ॥ विन्दुनय ॥ ॥ नमो कामालिङ्गय ॥ गुननमस्कारन्या
ये ॥ वकुलकमनिमूलाय ॥ वकुलकमनिकनिसकायनम ॥ विन्दु २ अनाः
मिकायमिकायसाहा ॥ विन्दु मेलासायवायद ॥ वकुलवाग्यध्वनोयनकेन्याय
हं ॥ वकुलकीर्णगुमुयवय ॥ वकुलकामानिमूलाय ४ रुट ॥ खनन्यास ॥
वकुलकमनिहृदयायनम ॥ विन्दु २ सिनससाहा ॥ धूमिवायैवायद ॥ वकुल
वाल्मीकीयकवयायद ॥ वकुलकीर्णननयायवयद ॥ विन्दु ३ सिद्धिकुट्टिकमूला
य ४ रुट ॥ जनयायवय ॥ वकुलकामानिविन्दु ३ कलकालिलिधिमहकन्या

कामालिवयोदयान् ॥ अर्धयात्रयुज ॥ आभयज ॥ आवाहनसंवत् ॥ छिंदव ॥
 आसन ॥ वक्रान्यादिआसन ॥ आलसकथयोदि ॥ मयूनायाययाइका ॥ ध्यान
 ॥ महामयूलमावृक्ष ॥ कामालिवालनयिनी ॥ नकुवसुयविधान ॥ नकुमा ॥ वसास
 नि ॥ नकुयस्यकृष्णदेवी ॥ सिद्धबावृषविशुद्धा ॥ नकुवकृष्णिनक ॥ मूषुमावावलेवि
 नी ॥ शक्तिशूकदेवी ॥ विन्दुकायावधननि ॥ कालवृक्षगनीदवी ॥ वनवृक्षानिवा
 शिनी ॥ यामयी ॥ शक्तिनादवी ॥ कामानी ॥ नमामुन ॥ छिंदवयुजन ॥ नगाकामालि
 युजन ॥ ॐ वक्राथनी नम ॥ ॐ ऊयाथ २ ॥ ॐ विजयाथ २ ॥ ॐ ऊथनि २ ॥ ॐ नमजि
 नाथ २ ॥ ॐ नन्दाथ २ ॥ ॐ रुद्राथ २ ॥ ॐ शिमाथ २ ॥ ॐ कलालिनि २ ॥ ॐ अग्निगर्ज

माहारे नवाय २॥ उहउकादिमाहाकृष्णयालायवलिंगद्रुस्यारु॥ उमाहेश्व
वि२॥ उदिवायागिरि२॥ उमाहायागिरि२॥ उयिद्वियागिरि२॥ उगनध्ववि२॥ उ
साकवि२॥ उकालनवायी२॥ उउहकधिर॥ उनिसाकवि२॥ उववमाहा
नवायनम॥ उदियवानुकमाहाकृष्णयालायवलिंगद्रुस्यारु॥ ॥ उका
माविनम॥ उगंमिवाय२॥ उधाविनि२॥ उधूलगिरि२॥ उववनागिरि॥ उ
उलायायि२॥ उदियनायि२॥ उमाहानद्यायि२॥ उहलामखि२॥ उवउमा
हारे नवायनम॥ उअग्निदिक्कनमाहाकृष्णयालायवलिंगद्रुस्यारु॥ ॥ उ
वैश्वविनम॥ उवाकसि२॥ उधावनामायि२॥ उवकाकि२॥ उविश्वनूयायि

२॥ उरुयंकवी२॥ उवृद्धिरुया२॥ उस्वस्कागिरि२॥ उनवराजनि२॥ उका
धमाहारे नवायनम॥ उअग्निवगालमाहाकृष्णयालायवलिंगद्रुस्यारु॥ ॥
उवावादिनम॥ उहंकावि२॥ उवागृवि२॥ उडिदि२॥ उधूमोवि२॥ उकल
रुयि२॥ उमार्गगिरि॥ उकलादि२॥ उदियवानुकी२॥ उउनमनमाहाकृष्ण
वायनम॥ उकालाकृष्णयालायवलिंगद्रुस्यारु॥ ॥ उअन्यायनिनम॥ उयि
सावि२॥ उहस्किनि२॥ उउकनि२॥ उधुऊनि२॥ उवृषकनि२॥ उयदा
दुष्टि२॥ उरुगुहाकि२॥ उसर्वोद्दि२॥ उकयालिसमाहारे नवायनम॥
उकयालि सुमरुकृष्णयालायवलिंगद्रुस्यारु॥ ॥ उवामुख्येनम
उविनरोडायि२॥ उमाहाकालि२॥ उककालि२॥ उविहगायनम॥

ॐ काटवायि २॥ ॐ शिमरुद्रायि २॥ ॐ वायुग्रामायि २॥ ॐ रुद्रायि नि २॥ ॐ कि
 षनमाहा र्वेववायनम॥ ॐ एकपादमाहा र्वेववालाथवलिंगुद्र २ स्वाहा॥
 ॥ ॐ माहा लक्ष्मी नुमा॥ ॐ वृद्धाय नि नम॥ ॐ वैष्णवि नम॥ ॐ वृद्धाय नि नम
 ॥ ॐ यद्वि कार्य नम॥ ॐ श्रीस्ववि नम॥ ॐ वा नादि नम॥ ॐ नावर्गि यि नम॥ ॐ
 शिवादि नि नम॥ ॐ संहालमाहा र्वेववायनम॥ ॐ शिमरुद्रमाहा र्वेववाला
 यवलिंगुद्र २ स्वाहा॥ ॥ नृनाथलाकि नियुजन॥ त्रिदीष्टीशु श्री गंडीशु
 या आधा कडाकि निपाइकी॥ त्रिजना नीतुमा स्वाधिसू नना कि निपाइकी
 ॥ त्रिजला लीलू लू मनि यूनकलाकि त्रिनिपाइकी॥ त्रिजका कीकू म

अना हनका किन्याडकी ॥ अना सासी सूया विस्व वसा किन्याडकी ॥ अना
हादीह मा आहादा किन्याडकी ॥ अना साजी कलक
मात्रिके यस्तेर कुलनगध्वि कुलवा लोधावि द्वाही भू किनिर
विद्ये सिद्धि कुलक माविकाथ मन्त्रो याडकी ॥ खठ गनयूजा धूयरा ॥
नगा वलि ॥ अना कुलक मावि विद्मह कुलकालिनिधिमह नगा कालि युथाद
यारु ॥ का की कु के नया राय वलि गं द्र २ खादा ॥ धी की कुल य व व ठ के नाथ
य व लि गं द्र २ खादा ॥ म गी मू धी कुल ग ली स राय वलि गं द्र २ खादा ॥ अ
सर्व विधि जी कृ ग जा मनु जा या ग जा कुल जा सन्धा द जा ऊ क विरू या ॥

गिनिनी खवलिरुवनि गावनिनी लकाकृति शकृति गृकृति वरुष
के वरु सफाष्टक नवाकृति ली जिउ गमिनिनी यथायनिय नानाष्टदः
वलि शदीन गृद २ ममसिद्धि कृ २ रद २ रुद स्वाहा ॥ ला कमहावलिन वन
का ॥ पूय दिव भाद निरु जय का ॥ ॥ न नो हि सा कि द वाव नी ॥ आधन ॥
कय त्यादि ॥ न क य द्या प्राय नम ॥ ध्यान ॥ अनुष्ठान युग सं का शं या शी कृ स
ठि ला च नी कया न व ल दारु र्य व क म हा स व म म ॥ न क्री श्री कृ श्री अग्नि य क
का म गि श्री लय मि ति स न र्थ सि क काम ध्व नि द वी न द्रा सु ॥ ॥ हा कि धी या
दू का ॥ ॥ प्रिया ऊ वि ॥ ख उं ॥ न स य ॥ आ वा द मू डा ॥ वलि ॥ न वि य वा द

वी ग्रह वाग्ग वी श वि धि म हि न च्छाम कि यथा द या न ॥ धन वाग्ग व ध्व मि य
जा ॥ आ धन ॥ क य त्यादि ॥ न क य द्या प्राय नम ॥ ध्यान ॥ य क वि मु य गि का शं
वा क यु का य था पि ली ॥ या शी कृ श क व न दे वि मा तु ल ग न थे व द ॥ प्रिया ऊ वि ॥
न क्री श्री कृ श्री स र्व व क जालं ध्रु वि ॥ ० ॥ अ ठि श ना था ल क श्री व द ध्व नि द वी वा
ल श कि नृ श्री या दू का ॥ ख उं ॥ न स य ॥ आ वा द मू डा द श य न ॥ वलि ॥ क्री वि
य वा द वी वि ग्रह काम ध्व नि वि धि म ही न च्छा क्री यथा द या न ॥ धन काम ध्व नी य द
॥ आ धन ॥ क य त्यादि ॥ न क य द्या प्राय नम ॥ ध्यान ॥ व रु रु जी ति न र्थ र व
धु का नि स मा य मी ॥ पू क का रु य र्व द वी या शी कृ श क वा य र्ग ॥ प्रियं ज ला न

क्रीमी मू सामयक यन्त्रु गिविग कन ह्री यष्टि मनाथ मक रुगमलिनिद
 दीवु ३ कालमहाकि ह्री याइ की ॥ खउ जिन सम्यक् ॥ आवाक मूडा दशय
 ॥ विलि ॥ मोहिय नाद वी विद्वद् शाकि ध्वनिधिमदि रु ग्या मूक गिवयुषादयान्
 ॥ धर्म रुगमालिनियुजाविधि ॥ नगामुनसूदनिदेवाचन ॥ धर्मा यनम ॥ हूना
 यनम ॥ अर्वे नारुयनम ॥ अर्ने हू या यनम ॥ अर्धर्मा यनम ॥ अरुना यन
 म ॥ अर्वे नारुयनम ॥ अर्ने हू या यनम ॥ आधारे सकथत्यादि ॥ ३ ये हू यदल
 वक्युद्वा म्नायनम ॥ ३ लायिधिया धियकय वृद्धय न्नायनम ॥ ३ वाजलाधि
 यक्य विष्णुय न्नायनम ॥ नार्जजाधिकय नूदय न्नायनम ॥ ३ याथायाधिक

थं ॐ धनय नाम्नाय नमः॥ ३० यो यः वक्राय विषदाधिक्यं सदाशिवयुक्ताय
 य नमः॥ ३१ क्रीं ॥ कियं वसुदेवि अमृतं नर्वाय नमः॥ ३२ क्रीं ॥ कियं वसु
 न्दविया नाम्नाय नमः॥ ३३ क्रीं ॥ कियं वसुनिदयाय नमः॥ ३४ क्रीं ॥
 ॥ कियं वाष्ठावेकाय नमः॥ ३५ क्रीं ॥ कियं नामानि सर्वमनुनाय नमः॥ ३६
 क्रीं ॥ कियं वासिष्ठं धनिसाधुं सिद्धाय नमः॥ ३७ वेयं वायं अयं वायं व
 मायं वेयं वायं क्रीं अमृतं दशदशिवयुक्तं नमः॥ ध्यानं ॥ नमः यद्गनि
 राधेवी वालं के किलनाय ॥ जवा कुंभं स काष्ठां जतिमि कुंभं भायमीं ॥
 यद्गनागयनि काष्ठां कुंभं भादक सन्निधं । सर्वमूकं नमानि क्रीं किं किं

जालमणी गी ॥ कालाग्नि कुल संकासी कूटिलाल कयल वायु ग्रह वृषाय
काष्ठी वदना सो जमलु ला ॥ कि कि दई नृ कूटिलाल ललाट मृदु येदि कीयि
ना कथे नृ का काने सुरु वय नम ध्वनि ॥ आनन्द मुदि गात्राल लि सादालिन
वावनी ॥ ए नम यख स कान विन गादु म क लुला ॥ सुगलु म लुला गाग कि
नन्द म नम लुला ॥ विसा क मादि निमोन स नय स्य छ नासिका ॥ गल विद
म विम्वारं वकु विम म न यमी ॥ मि न माथे स विडि न माथे विसा गना ॥
ग्रनाय म गुणाथ न विव काद हा क्षा रि गी ॥ क म्यु गी वाम हाद वि मृ ना
ल नलि न वृज ॥ न का ग्य वद ला का न क सु मा न क ला मृज क वा मृ

ज नख डान विद्या निरुन रु सु वा ॥ म का वय ल भाथ न समु न न यथा थ
नी ॥ दि व लि व ल नाय का म ध्रु द हा सु सा रि ना ॥ ला व ध्रु म लि दा व क क
न ना रि वि रु धि ना ॥ न न द्य व ल द्य टि न का वि यु क नि र्ग वि नी ॥ नि र्ग म
वि मृ डि न द्यो आ म वा डि व नी कु क्षा ॥ क द लि ल लि न रु रु स मा त्रा वृ ण मि कु
ध्वनि ॥ ला व ध्रु क द लि तु ल्यं उं द्या ख ग ल म डि ना ॥ वृ द्ध वि मृ सि य व ल
नि द्य वृ व न ध्रु मृ ज ॥ डि ना ध्रु ण न ध्रु का ण का नि ध्रु नान द्य सि नि ला
दि नृ जि न सि न्द्रु उ वा दा लि म ला गि नी ॥ व क व रु य वि धा नी या ण कु स
क ना थ गी ॥ न क मृ स्य नि व र्ण नृ न का रु न ध्रु म डि गी ॥ व रु रु आ डि न र्ग य र्ण

वानधनुर्दना। कर्पूरसकलामिश्रः। गीम्वनियुनिगाननी॥ माहात्म्यमहादामः
कृमात्रुणविगहा। सर्वश्रेष्ठमनवशाः श्रीः सर्वलोकानुरुधिनी॥ जगदाद्रादजननि
जगद्विजनकानिनि। जगदाकर्षयकानीः सर्वसौकाम्यसुन्दलि॥ सर्वलक्ष्मिमयिनि
यः यनमानधुनप्रिता। माहाजियुनमूर्डीतुः सृष्टावाहननामया॥ विंशयावाक्य
तलः नमस्तानाणिपूजया। पूर्वोक्तवाग्विदुः माहाजियुनसुन्दति॥ सक्रमधु
सर्विभ्यः नगजायमानकर्तु॥ जियाजैलि३॥ विंशोक्त
कृडाडिमानयि० श्रीवशानाथामकः श्रीमहाति
दवीः यनविष्णुमसकिः श्रीपादकापूजयामि॥ हृदयादिभैरवगनसिपूज

श्रवाकः त्रिषंदाः अनिमृडादर्शयतु॥ वलिधुमनुनी॥ गायिनि॥ विंशोक्त
जियुनादवीविग्रहः क्लीकामिनिध्वनिः धिमदः सौम्योः क्लीनयवादयानु॥ वाल
मूनी॥ थरुसुन्दनियुजा॥ ॥ गगनविद्वद्वाचनं ॥ गुरनमस्तानः श्यासा
जस्रयदुद॥ कनसाधनं॥ श्रीकनिककायनम॥ श्रीजनामिकायसाहा॥ श्रीमधु
शमायवाधद॥ श्रीगुरुश्यायद॥ श्रीजुगुलुयववद॥ श्रीजस्रयव
वद॥ श्रीहृदयायनम॥ श्रीहिनससाहा॥ श्रीसिषायवाधद॥ श्रीकवचाय
द॥ श्रीनगसुयायववद॥ श्रीजस्रयदुद॥ जलपात्रः श्रवणं प्रज्जा॥ रुतः
सुद्धिः श्रीशामयुजा॥ श्रवाहन॥ श्रसनः श्रधनसकयसादि॥ नकयग्रासना

ययादुकी॥ यकैप्रतासनाययादुकी॥ ॐ न॥ वन्धकपूर्यसंकासंथादि॥ यजन
 जंजंसाहियुनादवीशीयादुकी॥ त्रैकौसीः त्रिपुनस्वनिदवीशीयादुका॥ त्रैकौसी
 ॥ त्रिपुनसुन्दनिदवीशीयादुकी॥ त्रैकौसीः त्रिपुनः वाडिनिदवीशीयादुका॥ त्रै
 कौसीः त्रिपुनादुवीशीयादुकी॥ त्रैकौसीः त्रिपुनमालिनिःदवीशीया
 दुकी॥ त्रैकौसीः त्रिपुनासिद्धाशीयादुकी॥ त्रैकौसीः त्रिपुनाम्बाका
 शीयादुकी॥ त्रैकौसीः त्रिपुनालेश्वरीयादुकी॥ त्रैकौसीः त्रिपुनानन्दवीशीयादुकी
 थनवल्लि॥ अवाहः कवनिः अनिमज्जः कौ॥ वलिविय॥ त्रैकौसीः दविपुः वदः
 कनाथः कविनजनाः तानरासुनः कानामखः मन्धपुस्तकः अनियसिक्तः वलिगः
 क्रूरसर्वविघ्नाः नासयश्चक्रुदुखाहा॥ ३ कौकौकौकौकौकौः द्रुक्कयानायः अ

त्रिः वलिः सहितः वलिगः क्रूरसर्वविघ्नीः नाशयश्चक्रुदुखाहा॥ त्रैकौसीः
 मृगीशायनयः वन्दः वन्दः सर्वजनमवः शमश्मानयश्चक्रुदु वलिगः क्रूर
 खाहा॥ ॥ त्रैकौसीः अजलम्बुवक्रमृश्वः ॥ अश्वानसुत्येवव॥ ॐ दमृति
 श्वउकोर्यः उष्माः त्रिपुमदनी॥ जमुकोऽफकायश्चः ६ नायादेकदष्टकीत्रिनाव
 दश्चउद्यामः उरविश्चसुथायनी॥ अक्रुकोऽर्थवाद्रश्चः कमनाश्चकनालनाः ॥ अ
 मुखिश्चवद्यम्बुश्चः दलमश्चउष्मानकी॥ वृताढायजगिलारयाः रंकानायसुगश्च
 नीर्गकायालिकुथावायुः थानुवद्वश्चजानुकी॥ रुद्रकः लोणनिकानः सुतिहास
 विनसुथा॥ दन्तनाथदश्चवः नागकः ॥ यवउवात॥ रुकाताविनसिद्धश्चः रुः
 कृत्तिकामरासुनी॥ रुगातनीनवश्चवः लम्बीकोवसनसुथा॥ शुक्रउउः वज

नाथः सुनायुं कुरु कुरु आ। कथा न कुरु यथा सः कुरु या ना उदाहरण॥ यथा स द
पुं मृदा नः सु न कुरु कुरु या ल का। स वा व पु विदि ना सुः कुरु या ला ॥ ५ ॥ वः
कलिं कुरु व कुरु कानः सम सान च रु या व द। म दाल कुरु व ले धी नः काला मुरुः
व स न द न क थ कुरु व र वा थः विज न व द नो व स। घ ण ना वा मु द वा सोः व द यः
॥ ७ ॥ उ ना म्ब र ॥ स क म रु लि धा नो यः ॥ य व न म न रु न स थ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥
नि वाम नि रु द कः न स कुरु य ना थ कुरुः कुरु व र ग थ कुरु कुरु। ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥
कुरु स द कालिः व नि यु जा नि व द य न ॥ व सान कुरु व रु यो लीः दि जा यो ग
कुरु व नि। कुरु गुरु व रु यो लीः व सान नि व लि का कुरु ॥ ३१ ॥ नि यो धि कालि

व सानः कथा द न न क य न। व र ना ॥ यि कुरु न क सा ॥ ३२ ॥ वि कुरु ल रु यि कुरु लः
ला व ना ॥ ३३ ॥ कुरु क ना ल रु यो यः कथा ना रु न ना क ना। का सि न रु द ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥
मालि मि न रु यो यः ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥
॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
स द ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥
न रु ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥
॥ १११ ॥ ॥ ११२ ॥ ॥ ११३ ॥ ॥ ११४ ॥ ॥ ११५ ॥ ॥ ११६ ॥ ॥ ११७ ॥ ॥ ११८ ॥ ॥ ११९ ॥ ॥ १२० ॥ ॥ १२१ ॥ ॥ १२२ ॥ ॥ १२३ ॥ ॥ १२४ ॥ ॥ १२५ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥ ॥ १२८ ॥ ॥ १२९ ॥ ॥ १३० ॥
नि रु यि मा दि ना जाः स र्व वी व ली रु व न ॥ १३१ ॥ ॥ १३२ ॥ ॥ १३३ ॥ ॥ १३४ ॥ ॥ १३५ ॥ ॥ १३६ ॥ ॥ १३७ ॥ ॥ १३८ ॥ ॥ १३९ ॥ ॥ १४० ॥ ॥ १४१ ॥ ॥ १४२ ॥ ॥ १४३ ॥ ॥ १४४ ॥ ॥ १४५ ॥ ॥ १४६ ॥ ॥ १४७ ॥ ॥ १४८ ॥ ॥ १४९ ॥ ॥ १५० ॥

विय॥ वैद्रीं शैवैः नमोऽस्माकनः कृतं या नायः अस्मा अस्माकः सदिनायः यद
दिः कुरु २ मरु २ खनु २ अमीयमाहावनः यलाकमः शीशुमः कालिः कारुः अ
वदन २ लाके दिरु दिरुः कुरु ८ ०० मी वलि युजाष्टि कुरु खाहा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ नकुव
लि ॐ नकु वनि ॐ ॐ ॐ नमसाहा ॥ ॥ नमोऽस्मिन् नमोऽस्मिन् विन विन ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ नकुव
वैयि (अयविनिः दानाय दानमवयः। कुरु यकुरु संदहा ॥ सर्वदिग्गा ग सक्ति
गा यागिनि यागविनः ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ समागर्गः ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ मद्रावर्कः ॥ शी ना
थवन दो मम ॥ यरु ॥ सासन देवीः उरुया दार्वे न नगा। सर्वसिद्धि य
सादो मः देवी गसा सुवलय दा ॥ विना नीया गी जी नाचेः यसिद्धि र्ममदि

नन। गंद कु वलि देवीः समयाश्च नमलक। श्रुति स्मृति मनः ॥ यस्मि
मो समदा स्मिद्धि विनी। निरुक्त यरु दसा नीः यागिनि गल संकला ॥ कुरु
कालिक साधानिः इन्निमिनाद रा विरुत। निरुक्त यरु सर्वोऽथः यागिनि
गन सीला ॥ ॐ कानादि वुरु विनः सुयसा नाः ॥ यकि र्निगा। उपविन सुयः
दाहाः सिद्धि नु समय सदा ॥ महि या दाल वक्रा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ सर्व सु नी न ना वरु ॥
यागि न्या या गइ का माः समुय न्नि सु सा धका ॥ विन कर्म वृ विनः ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ सर्व
निरुक्त देवता। शिद्धाश्च पूरु का वाया ॥ सावका समय तथा ॥ नगने वा थः
अम वाः अठ वा म्वा सन दय। वायि कुरु क विरु वाः स्मसान मा नु म ॐ ॐ

नाऽऽत्रयधनादय्याः वक्रायाववस्तिता। नसर्वविस्तुष्टाः वलिद्रु
 कुसर्वेन॥ सलनागतादृक्कृषीः सर्वमन्तुलप्रदी। यानवममयाकम
 जुगकनिश्यामिज्जुर्द्वीतं॥ वलिप्रथयदानेनः सन्तुस्मामविनुका। स
 र्वकम्मानिसिधुः सर्वदायाः वसन्तुम॥ शिवशक्तिप्रसादनः श्रीः
 कृकानानमाम्युर्द्वीः ॐ मावलिपूजाष्टद्वयममसानि कुरु स्वाहा॥
 ॐ निसमयवलि॥ ॥ नैकीसोवक्रसवक्राः प्रवृत्तिप्रवृत्तिः नसदा
 शिन्धुः सिन्धुः यवन्मा॥ नारुष्टाः कुरुनक्रः यष्टुयीष्टाः नयगः यवर्गः पुनः
 याऽय॥ वज्रवेष्टाः कलानः कुरुकनः कगिनिः गप्रवनिष्ठसम्पादवीः वक्र

विकिर्षः सयमनिः वगवाः वक्रगर्भः पुनानु॥ उद्धः वक्राः प्रगावाः दिविग
 णः गलः निसकलः कुगलवाः यागः नवाः नर्वाः सलिलः यवनयोः ऊगकः
 उक्तिगवा॥ यि० कृगोः ययिणः दिष्टः वयः नक्रगः पुस्यः वन्धाः दिकेनः
 यिगादय्याः शुधनः ध्रुवलिः विधिनाः यादुविर्कः प्रवन्धा॥ साधुः सिद्धि
 वसर्वः जलिः पिशितः वलिः पूजाष्टद्वयममसानिः कामस्वाहा॥ ॐ मीव
 लियुजाः गृहद्वयममसानि कुरु र्द्वीरुट् स्वाहा॥ मूनसंघियाज्ज॥ सुयक
 थधनगव॥ निर्वोच्चय॥ वाकमहावलिनः पुनर्क॥ ध्रुवः दायः न
 वन्धा॥ जायः कृग॥ यलिष्ठ॥ ध्रुवपूजा॥ यष्टुनयन॥ धनारवावाकः श

रुननः विननाः ऊडावः खावानकः स्वयच्छयकः देवनिवर्कनादिः द
 वसम्ब नविय ॥ माननठः खानच्छयः जालतिकेनः इकेः देवथिय
 कावविय ॥ यनमीश्वः सम्बनधनिवानावविय ॥ जवाय्येयजा ॥ दखि
 नायावक ॥ सम्बनः मोहनीः कयः समयच्छय ॥ ऊजमानः अविसेखविय
 रुमनयायः विल्लीऊकानयः धनिः जशिषावियमानः समयानकः य
 वायवानः रुनसाः वलिवायः कर्कयुजा ॥ कर्कयाः अविसेखः सः
 सिकोदूः पुन्यानमूयुजाः दयादशुया ॥ ऊजमानः अविसेखवियः वी
 नः सिधनः मोहनीः सम्बनः खानवियः शिधमूठवियः दसकनक

नः सारवीथय ॥ रुमनयायः विल्लीऊकानय ॥ धनीः समयानकः ऊयः
 गिकायायः कलकयुजायाडावच्छय ॥ ॐ नोष्ट्रियूनसुन्दनिः कम्मा
 वनः विधिसमायु ॥ ॥ वलिच्छायः काथा ॥ उग्रवन्डावलिः यकेवनि
 धाखा ॐ नाय ॥ उक्तनकाकेनासः कालिवलिः ॐ नुनाजायाः ऊवनेकाउ ॥
 दनः म्याननेवयः दमाशुनख ॥ दखीनकाः केनासः म्याननेवयः मूनवलि
 कोथुनख ॥ ऊवनेकाउः ददः ऊवयाऊजावनः केनासयीनाय ॥ दन्दनख
 वलिनादी ॥ ॥ गहनदगसाः यवेदेमुनिमयायः अविसेखनव ॥ ४
 अनलियः सकनगीः उथउरुनी ॥ ॥ वखाधनः यानकेमदः देवमान

वासयैकमान ॥ ॥ महनीयाविधिः वाधिनकः देवयादु नियायः ^{नमः २} वल्लव
 नडावः धामः मणिकाः आसः मूलं आसयाडावः मूनमः कः काले।
 न स्ववियः धनधूनडावः याथयुजा ॥ ॥ नवमिकाः कः कनयुजाया
 ताः कतादयकः ववनासिखायमानः दुर्नेखनसूनयाताः दयकः सग्वन
 रुद्धिः यीकाः प्रकाः आनतिः वनयतिवाः कनयुग्वदद्धिः देयुनियायः
 वननलडावः थं कालिकाडावः स्वसि कसतयः तां जादवीयादि ॥ यन
 यावः स्वयकायावः थं कानिद्रायः निवकुनादिः याडावः सनानयायः वीन
 सिन्धनः ऊजमकाः अइवानः कनेयुगकातयः सग्वनवियः स्नानः सेवि
 दासी

यः प्रियीरुनिष्ठयः ॥ गणयाया ॥ सदननयः आनतिकेनः यनिसुयायः
 नायजाडावः प्रनिसिगाडिदवर्षः सुयर्किगातवनिययः सानिर्दयनिय
 दनः ऊजमानुसवेदा ॥ सनो सुदियनेदनः यन्तोनाऊनयेवकः ऊजमानस
 तां नयः सुयुग्यसुवोडमः नऊसुसवेदादवीः यसैरुनवनमो सुने ॥
 धनधूनडावः गणयाडावः तिकायावस्नानः धिनडा नः वानाहकयैः मासन
 ऊं ग्यादि ॥ वाकः नवमियार्वेनः स्वपुस्तयनः दसमिजागः गवकाताथः
 नीरुवकु ॥ धनधूनडावः सदायाथः वास्यदय ॥ कनयुजाधूनडावः इका
 यावः थवऊवसतयः यस्य राजनयावर्क ॥ नगुनिड ॥ इकायावयुजायाः

डाहयः कर्मोवनधूनडावः कृष्णलसुजायुजायाय॥ भाहनिनशुनीरुय
 धूपः दीयः नेवद्यः जायः सायः यनिसु॥ वाक्क॥ वृषयुजा॥ यसूनय्येन॥
 दवदरिनायावकः हसाद्यः यादाद्यः यावकः अन्नसंकर्षयावकः
 मय्वनः मोहनीः रुकावक्षुयः वाहानकः शुभय॥ युजाशुक्तिः गायः यन
 वासः धूनः तिस्यानः लाहानः वीरः सिन्धनः आहुजीमकाः खानः नः
 हानः दखनालयः कुरुवाद्यनिसाः अनाश्वदक्तिः डाहसवमानः मय
 सवनिः माधिरु॥ ६॥ मगाकलानिः मगाकलः ससाः दकोः यानुः य
 ताताः कर्चनीः डासमया॥ नयनातुसनिम्यानाः कृष्णयुजाविसऊ

नयाडावक्षुयं॥ समर्कनमानकावयमान॥ ॥ निहावलडावः यि
 नहयाखानविय॥ इनेकताडः मगव॥ विनरु॥ कलकयुजा॥ सानि
 कोकः देगुनियायः जजमानयाः निशधूनकः यथालयुजायाय॥
 वननेनडावः गेक्षुखानयुयावक्षुयः सय्वनः मोहनिशुयः वत्थयाव
 शुभयः उथेड॥ जजमानस्यसि कलनयः खानकायावः नवक्षुयः गे॥
 जादवीः इगुयाकलनः खानवियः निवर्द्धनादिः मगाकलः गानवाः सय्व
 ननखायः कनययाः अत्यखविय॥ वीरः सिन्धनः सय्वनः मोहनिः खान
 सवियः गे॥ शुभैर्यनि सुधनायाः सर्वसुकर्यकनिः यसनीमिजः

यादवः स्वप्नार्थनमास्तुते ॥ डाकायावः नर्थनयाडावः यासनयावक
 नक्रयायासनः डाकावयावक ॥ थनधूनडावः सेराननयः अनतिकः
 नः यनिसु ॥ दिगसयावः डुयः वार्कः शिद्धिः शुशिद्धिभयकः साया
 न३ ॥ गमनवाथनाकायः क्रमायविजयायव ॥ सुरुयक्रविनासायः यूनना
 गमनायव ॥ रुतसयानः नवनागः सतिमिना ॥ वलिनाडासवाय ॥ स्वर्ग
 कायावः डादवीः यनवावः थवथयसंत्य ॥ ॥ महनियार्दवसनेः मु
 मान ॥ ॥ वसाधनयामानः यानडासनावासनः नकासनयामान ॥ वाया
 कलंकः अनायागसः वलिनाडासः सकनः वलि ॥ महनियारुमनसंति

कुरुश्री ॥ वसाधनयाः न कुरुश्री ॥ ॥ रत्नाकरयुगाः नासिय ३
 सूर्यार्थः अनुनमस्कानः याणायाम ॥ आस ॥ उक्तिं पूवाः अलिनिश्रुताय
 रुत ॥ कनसाधन ॥ उक्तिं पूवाः अलिनिश्रुताय ॥ सुमुखिदेवीन
 केनिश्रीनम ॥ माहायिसाविनिमः अमाश्रीनम ॥ श्रीअनामिकाश्रीनम
 ०:०:०: कनिश्रीनम ॥ उक्तिं पूवाः अलिनिः सुमुखिदेवीः माहायिसा
 विनिः श्री ०:०:०: कनयुश्रीनम ॥ अंग आस ॥ उक्तिं पूवाः अलिनिः
 दयायनम ॥ सुमुखिदेवीसिनसेखाहा ॥ माहायिसाविनिशिखायवषट् ॥
 श्रीकववायद् ॥ ०:०:०: नृगयायवीषट् ॥ उक्तिं पूवाः अलिनिः सुमुखि

[illegible]

नमो नमः॥ वंदनमागिनमः॥ त्रियाऊलि३॥ उंडविष्टवाअलिनीः समु
खिदवीः माहायिसाविनीः ऊँ०ः०ः०ः महायिसाविनीः श्री वाइकां॥ य
उंगनसंयुज्यतु॥ श्वाहननादिः बलुनाकृपस्यंनमः॥ ननु वलि॥ उड्वि
ष्टवाअलिनीः समुखिदवीः माहायिसाविनीः वक्रमयीः उंडविष्टसखा
यज्ञानः सुनामीसः अदनः मधूयुकः वलिष्टद्रमसकलः मिष्टः सिद्धि
दहि२०ः०ः०ः दुरुद्धादा॥ धर्मेवलि॥ सा कमलावनचूनके॥ ध्यूः
दीपः निवशः जय॥ जयसमयेन॥ शुक्रनिशुक्रमकिर्वः गृहणात्वं
रुतेजयै। सिद्धिरवतु मदवीः खलसादालयिकुति॥ धूर्ष्टदित्या॥ गो

॥ अखण्ड मन्त्रना कालं श्यादि ॥ वम्य कः कलि का (गो) लीः वीरः विरु स्युत
कः जननयाः विरु सरु र्जः सी लीः वीरः धी द ह मि षि तु वी मि । उ य नि ष धः
थो ग नः रु व ना धा लीः स दा द या द नः ना रीः अ ध निः ता री वा लीः रु र्ज म साः
ली ॥ अ अ ध न अ क ना रु र्ज लीः अ ग दा व न लीः स मू ल स क रु लीः अ नू लीः अ नी
नी स न रीः का म ल व लीः म ह सु व स न लीः अ ह न न त दी रा ग्यः अ ह ज्ञा न वीः अ न
रु वे ना ग्यः । उ र्ज कि न न रु रा ग्यः का र्म क लः क या त्रि सी रा ग्यः अ व नीः वि नू वि
नः क व नीः म यी वि नः मू न नी क या नी कृ यी । अ जी क न क ल रु अंः कृ यि न क र्ज
भीः कृ न ल्ना मि म नीः अ नि ग म य ध नि न नी नी । वी ना अं क्री ना का क्री नी । अ न नी

मृ द ल स्वा नीः सु न रु न न नी नीः न मा मि रु व का नी ॥ अं का न र्ज अ नीः अ नू की
मू य नि षः अ यान के लि क ल क लीः अ ग म वि यि न म यू नीः मा याम न वि रु
व य (गो) नी ॥ अ व द न ट र्ज टि न व नीः य नी अ नीः ट का वि नी वा द न र्ज लाः क म्पि
न शि न स व मा मि मा र्ज नी ॥ न व न व ना ग न र्ज नीः र्ज नी न स ना वा स ना रु अंः सु
न रु नः य नी ल मा न अंः म म गि न म अं क्री क नी रु मा र्ज नी ॥ ॥ अ मा र्ज दि ति द र्ज
ग नू ति ल यि द नाः वि न न य द लीः रु रु ख र्ज व र्ज निः न द ध क ल दि नीः नि रु
अ नू क या लीः व का र्ज म रु मा साः मा दि नी य न स र्थः मा न गी शी य दि वः न मि
उ र्जि न ना था ॥ ॥ अ थ वा न श्या दि ॥ न य्ये नी ॥ मू ख सु र्जिः अ य वा व क ल क स वा

वकलक्ष्म्या॥ कलंक्याविसख॥ ॥२॥ स्मिन्नज्ञानया॥ स्मिन्नज्ञानमाज्ञादर्व
 दवानामन्मावर्तः जावत्सूर्यश्चन्द्रश्च॥ तावत्स्मिन्नमावर्तः निविष्ट
 कृयते नाथः सदा स्वस्त्ववर्तः नवमानिनश्चिह्नः नवानाग्निर्ह्येतथा॥
 जावत्स्वच्छसूर्यश्चन्द्रश्च॥ यावद्वाकासमदिनः तावत्स्वच्छवर्तः निश्चिह्नः थावर्तः॥
 वृष्टिवाह्या॥ स्मिन्नज्ञानमाज्ञादर्व॥ ॥३॥ ॥ अखनः कर्माचार्यो विना गयारुणा॥

आशा अरुणा

878

ASHA ARCHIVES